रात्री क्लास ओमशान्ति 8-9-67

मित्र सम्बन्धियों को भी अपना अनुभव सुनाना है। कैसे हम परम पिता परमात्मा को याद करते हैं। क्योंकि बिगड़ पहचान ईश्वर को याद करना कोई काम का नहीं। बाप ने समझाया है आधा कल्प शिव बाबा को आधा की पूजा करते आये होंगे। जिन्हों के ऐसे संस्कार होंगे वह दूसरे जन्म भी शिव की पूजा करते आते हैं। परन्तु यथार्थ उनको कोई नहीं जानते। कितना लम्बा है, कितना चौड़ा है। जैसे लौकिक बाप की याद आने से याद आता है। कितना बड़ा है वा छोटा है। कोई मिठोड़ भी होते है। अब शिव बाबा लिए भी पूछना चाहिए कितना बड़ा है। वह किसको पता नहीं है सिवाए तेरे। तुम ब्राहमण बिन्दी कहते हो तो हंसी करते है। बस बाप बिंदी है। अजब खाते हैं। यह कैसे हो सकता है। कभी नहीं मानेंगे। और खुद मनुष्य बोलते हैं आत्मा स्टार मिसल है। वह भी परम आत्मा है तो आत्मा इतनो हो होगी ना। अगर बड़ा हो तो जब इस तन में बैठते हैं तो यहां गोरा निकल आवे। तो यह तुम बच्चे समझते हैं क्योंकि बाप बच्चों को ही आकर रचता और रचना की आद अन्त का ज्ञान बताते है। कहते है मैं जो हूँ जैसा हूँ कोई नहीं जानते हैं। आत्मा लिए भी समझाते हैं मनुष्यरीज कहते हैं पतित आत्मा पावन आत्मा तो आत्मा लिए ही कहते है ना। कहते भी है छोटी स्टार मिसल है परन्तु यह ख्याल किस है इतनी छोटी आत्मा 84 जन्म कैसे लेती है, कैसे रिपीट करती है। यह ख्याल कभी नहीं आवेगा। सिर्फ कहने लिए कहते स्टार मिसल है। यह नहीं समझते कितना छोटा सितारा 84 लख योनियां जनावर आद कैसे बनते। बाप आकर सभी बाते अच्छी रीत समझाते हैं। बेहद का बाप समझाते है यह तो कल की बात है। तुम अब तक मेरी जयन्ती भी मनाते आते हो। वर्ष2। अब कोई तो नहीं आता हूँ। एक ही बार आता हूँ। इसका यादगार भक्ति मार्ग में मनाते आते हैं। सतयुग मे तो नहीं मनाते हैं। वहां शिव की पूजा तो कोई करे नही कोई याद करते हैं। बाप समझाते हैं यह सब भक्ति मार्ग द्वापर से शुरू होता है। परन्तु जानते किसको भी नहीं। लक्ष्मी-नारायण की पूजा करते हैं। दोनों को चार2 भुजायें दे दी है। अब दोनों तो चर्तुभुज नहीं हैं। दो लक्ष्मी दो नारायण की है। शंख चक्र भी उनको नहीं है। यह तो ब्राहमणों के अलंकार है। शंख ज्ञान का तेरे मुख से बजता है। जैसे कृष्ण को मुरली देते है। लेकिन ज्ञान की मुरली तो तुम बजाते हो। इस मुख वा शंख की बात नहीं। सबका अर्थ है गदा की भी दरकार नहीं। वह तो हिंसा की चीज है। तेरे हाथ में ज्ञान की गदा है। यह सब बातें बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। बाकि तो सब पूजा करते रहते। शास्त्र सुनाते रहते अर्थ कुछ नहीं। वह सब है भक्ति मार्ग। अब तो तुम बहुत थोड़े हो। धीरे2 वृधि होगी। 108 की विजय माला बनती है। तो उनकी पूजा कितनी होगी। राजाएं थोड़े होते है पूजा तो ढेर होते है। इसलिए बाप कहते है बड़े शहरों में जहां ढेर मनुष्य है वहां म्युजियम बनाओ। तो बहुत आयेंगे। उन समझाओ 7 दिन न दे सको तो 5 दियो 4 दियो। पहले से सात रोज सुन डर जाते है। सिघत नहीं करनी चाहिए कि सात रोज देना ही पड़ेगा। पहले पूछना चाहिए कितने दिन रहेंगे। 4 दिन रहेंगे अच्छा एक घन्टा रोज दे सकते हो? नबज देखना चाहिए। कहे मुश्किल है तो समझो इस में दम नहीं है। कहे कोशिश कर आयेंगे तो समझो कुछ पूजा मे आने वाला है। कहे जरूर आऊंगा तो समझो तीव्र पुरुषार्थी है। ब्राहमण बन सकता है। तो नबज भी देखनी चाहिए। 7 रोज है ठीक। कारन टाईम मे भी 7 रोज खाते है। जो तीव्र पुरुषार्थ होंगे वह 7 रोज देंगे। इनको पहले टैम टैशन दियाओ तो समझावे बेहद के बाप से कैसे बेहद का वर्सा ले सकते हो। भारत को बेहद का राज्य भी था। हद का राज्य भी था। अब तो पंचायती राज्य है। तो बच्चों को सारा 84 का चक्र समझाया गया है। यह कोई स्वदर्शन चक्र तो नहीं है। जो हाथ में फिरा हो। यह तो अन्दर मे बुधि मे है। अब वापस घर जावेंगे फिर यहां आकर 84 जन्म लेंगे। इतना भी सुबह को कर याद करो अब वापस जाना है। तो भी बहुत कमाई है। कोई आसरी धंधा न करना है। कोई तो धंधे मे इतना बिजी रहते है जो 15 मिनट भी याद नहीं कर सकते। कहते धंधे से थक कर सो जाता।

हूँ। सुबह को उठ धंधे पर चला जाता हूँ। याद नहीं कर सकता। अब याद न करेंगे तो विकर्म विनाश न होंगे। पद भ्रष्ट हो पूजा में आ जावेंगे ना। पुरुषार्थ तो करना है। ऐसे मोस्ट बिलवेड बाप से बेहद स्वर्ग की बादशाही लेने का। 24 घंटे तो कोई काम नहीं करता। किस भी हालत में याद जरूर करना है। जो पावन बन पावन दुनिया में जाये सकें। गरीब तो बहुत शाहूकार बनने हैं। न शाहूकार पुरुष आते हैं न शाहूकार स्त्रीयाँ आती हैं। स्त्रीयाँ भी गरीब ही उठाती हैं। माताओं पास कुछ न है तो और कमाई जास्ती कर सकते हैं। जिन पास पैसा है वह कम कमाई कर सकते हैं। बाबा को आठ आने, रुपये का भी मनिआर्डर भेज देते हैं। हमारी भी एक ईंट लगाये दिया। मैं लिखता हूँ यह तो तेरे सोने की ईंट लग गई। चाँदी की भी नहीं। अगर इतना याद करते हैं प्यार है सोने के महल बन सकते हैं। इसलिए गरीब निवाज नाम पड़ा है। गरीबों का बहुत ऊँच पद बनता है। और है बहुत सहज। पाई पैसे का दान है। बच्चे तो बाबा को ढेर से बहुत हैं। कितने ढेर ब्रह्माकुमारी बनते हैं। सूर्यवंशी चन्द्रवंशी घराना बनना तो जरूर है। भावी टले न टले। तेरे लिए तो वन्डर है। वह तो मेले पर मेले होने जाते हैं। यहाँ तो आकर गुल 2 बनते हैं। वह तो रोज मंदिर में धक्के खाते हैं। तुम तो 6 महीने, 12 महीने यहाँ आते हो। अच्छे 2 बच्चों को तो बहुत कशिश होनी चाहिए। वह तो महीने 2 जरूर चक्र लगायेंगे जिनको कशिश होगी। यह भी थोड़ा समय मिलन का है। ऐसी कैलेमेटिज आवेंगी जो आवाजाई खलास हो जायेगी। तुम आवाज सुनते रहेंगे वह तो कहते स्टार गिरेगा। लेकिन स्टार गिरने से प्रलय नहीं होगी। प्रलय तो इन बाम्ब से होगी। जो आते हैं ट्रेन में तो मैडिल्स लगे होने चाहिए। जहाँ भी जाओ इस मैडिल्स से बहुत सर्विस कर सकते हो। परन्तु बच्चों को याद की कशिश नहीं है। इसलिए देहाभिमान आ जाता है। बैज लगाने लज्जा आती है। मिलेट्री को तो सदैव बैज लगा रहता है। तुम भी रुहानी मिलेट्री हो ना। एक तरफ त्रिमूर्ती, दूसरे तरफ बाप का वर्सा। बहुत समझाने में सहज है। तुम भारत वासी देवी देवता थे। स्वर्ग वासी थे। अब चक्र लगाये नर्क वासी बने हो। अब बाप को याद करो तो पाप कट जायेंगे। फिर स्वर्ग का वर्सा मिल जायेगा। यह बताने में मेहनत है क्या? अच्छा मीठे 2 रुहानी बच्चों, यह अक्षर भी बाप ही कह सकते हैं। यह अक्षर कोई मनुष्य तो कह न सकते। रुहानी बाप जिस्मानी दादा द्वारा बच्चों को याद प्यार देते हैं। अर्थ सहित समझाते हैं। तुम सृष्टि और ब्रह्माण्ड दोनों के मालिक बनते हो। मैं नहीं बनता हूँ। ऐसे मालिक बनने वाले को गुड नाईट और नमस्ते। यहाँ तुम बैठते हो तो अन्दर में बहुत खुशी होनी चाहिए। अथाह सुख मिल रहा है। बाबा हमारे सन्मुख बैठे हैं, भोजन खाते हैं। शरीर में बैठ देखते हो। बाबा हमको पढ़ाते हैं। यह भी तुम जानते हो। मनमनाभव अक्षर अभी ही सुनते हो, फिर कब नहीं सुनते। जितना साफ होंगे उतनी ही चकमक तरफ खेंचेंगे। आत्मायें चकमक से छोड़ी भागती हैं। बाकि शरीर तो खतम हो जायेंगे। बच्चे जानते हैं आत्माओं का लिमिटेड नम्बर है। 500सौ करोड़ से कम वा जास्ती नहीं हो सकते हैं। लड़ाई में करोड़ों मरते हैं फिर जाकर जन्म लेते हैं। मनुष्य ही बनते हैं। यह सब राज़ तुम बच्चे ही समझते हो। गीता का भगवान कृष्ण नहीं है। यह भी बाप आये समझाते हैं। तब तुम समझते हो। तुम्हारी विजय इस एक बात में होनी है। गीता को भगवान का नाम डालने से ही इतना नाम देते हैं। कृष्ण की याद आवेगी तो यहाँ शिव को याद कर न सकें। याद परमधाम में आयेगी। कृष्ण को ऊपर नहीं समझेंगे। ऊपर में है शिव बाबा। कहते हैं मैं भी तुम आत्माओं साथ परमधाम में रहता हूँ। अच्छा :- बाबा ने समझाया है इन बैजेज पर तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। दस को पूरा देंगे एक ऐसा निकलेगा जो तुम्हारा दस का दाम निकल आवेगा। बैज से तुम कोई को स्वर्ग का महाराजा बनाये सकते हो। इस में पूरी नालेज है। परंतु ऐसा कोई बच्चा दिल पर चढ़ा हुआ नहीं है। जो ऐसा काम करके दिखावे। फिर कह देता हूँ ड्रामा की भावी। अच्छा जो अब विदाई।

मनमनाभव और मद्याजी भव ओम्शान्ति ।